International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 410-412

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 410-412
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-08-2020
Accepted: 17-09-2020

डॉ0 विनीता रानी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 विनीता रानी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

नयी हिन्दी कहानी विधा में दृष्टि मूलक नवीनता का सर्वेक्षण

डॉ0 विनीता रानी

सारांश
इस युग का आरम्भ स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् होता है। प्रेमचन्द्र युगीन कहानीकारों का आग्रह विधितापूर्वक साहित्य सृजन की ओर रहा। उन्होनें अपनी रचनाओं में सामाजिक मान्यताओं और आदर्शों का प्रतिरूपण किया, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यकायक जीवन मूल्यों में परिवर्तन प्रतीत होने लगा। परिणामस्वरूप समाज के दो रूप सामने आये – एक तो वह जिसने स्वतन्त्रता संग्राम लड़ा था और देखा था। दूसरा वह जिसने स्वतन्त्रता प्राप्ति का विवरण पढ़ा या सुना था। इसी युग में सन् 1950 के आसपास हिन्दी की नयी कहानी अपनी नयी सजधज के साथ कहानीकारों की लेखनी में प्रविष्ट हुई। नयी कहानी के प्रर्वतकों में मोहन राकेश का नाम अविस्मरणीय है। उनका ''जानवर और जानवर'' कहानी संग्रह (सन् 1948 में प्रकाशित हुआ) अर्थबोध की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इस आन्दोलन में राजेन्द्र यादव ने ''लक्ष्मी कैद है'' संग्रह के माध्यम से सहयोग दिया।

प्रस्तावना
स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी–कहानी के समाज के परिवर्तन को समाहित कर कुछ ऐसी विशिष्टताएँ सामने रखी जिनसे पाठक को समाज की समग्रता की झाँकी मिल सकती थी। मोहन राकेश ने ''मिसपाल'' एक और जिन्दगी'' तथा ''अपरचित'', भीष्म साहनी ने ''चीफ की दावत'' तथा निर्मल वर्मा ने ''परिन्दे'' कहानी लिखकर महानगरीय विखराव की अवगति करायी है। कमलेश्वर, मन्नु भण्डारी, ममता कालिया, नरेश मेहता, रमश वक्षी, रमेश उपाध्याय, नन्द भारद्वाज, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, दीप्ति खण्डेलवाल, इस युग के उल्लेखनीय कहानीकार है।
इस युग की कहानियों की दूसरी विशेषता बदलते हुए जीवन मूल्यों का सूक्ष्म अध्ययन है। अनास्थावादी दृष्टिकोण की गहनता का परिचय देकर नया कहानीकार नये जीवन मूल्यों का प्रतिरूपण ही करता है। उसकी दृष्टि में सामाजिक विसंगतियाँ, पारिवारिक संघर्ष और आर्थिक विषमताओं का चित्रण महत्वपूर्ण है। इसी युग में कुछ कहानीकारों ने आंचलिकता का पुट देकर प्रसिद्धि प्राप्त करने का प्रयत्न किया। आंचलिक कहानीकारों में ''फणीश्वर नाथ रेणु'', नागार्जुन, मार्कण्डेय तथा शैलेश मटियानी का नाम उल्लेखनीय है। इन कहानियों में घटना और व्यक्तियों के माध्यम से अंचल विशेष की समस्याओं पर दृष्टि को केन्द्रित किया गया है।
सन् 1950 के पश्चात् हिन्दी कहानी ''नयी कहानी'' के दौर से गुजरती हुई कुछ नयेपन की मांग करने लगी और ''सचेतन कहानी'', ''अकहानी'' तथा समान्तर कहानी जैसे आन्दोलन तथा नारे पैदा हुए। वास्तविकता यह है कि आन्दोलन और इनके नारे मात्र आन्दोलन और नारे बनकर ही रह गये। कुल मिलकर इतना सत्य है कि नयी कहानी सामयिकता के साथ कदम से कदम मिलकर चल रही है। समाज की नयी कहानी सामयिकता के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। समाज के विविध अंगों का सूक्ष्म निरीक्षण, बदलते जीवन–मूल्यों का चित्रण, आंचलिकता, कस्बों और महानगरीय जीवन का चित्रण, भोगे हुए क्षण की अभिव्यक्ति, जीवन्तता, संकेतात्मकता, नवीन शिल्प आदि इसकी विशिष्टताएँ है।
अन्त में कहा जा सकता है कि हिन्दी–कहानी का वर्तमान रूप बहुत ही सधा हुआ और संतुलित बनता जा रहा है। अतिवाँ तलछट बनकर नीचे बैठती जा रही है तथा और जो ऊपरी गन्दगी थी स्वतः ही समाप्त होती जा रही है। आज की कहानी सभी प्रकार की विसंगतियों से सीधा सम्पर्क स्थापित कर चुकी है। यह सम्पर्क कहानी की ईमानदारी और तीखेपन दोनों का ही प्रमाण है। यह प्रमाण ही कहानी की आधुनिकता और सामयिकता है।
सन् 1950–53 के आसपास ''नयी कहानी'' नाम प्रचलित हुआ। वास्तव में ''नयी कहानी'' एक आन्दोलन के रूप में सामने आयी। इसके बारे में हिन्दी जगत में काफी तर्क–वितर्क हुआ। हिन्दी के विकासक्रम में इससे पूर्व भी अनेक मोड़ आये, अनेक परिवर्तन हुये लेकिन ''नयी कहानी'' अपने स्वरूप

कथ्य और ध्येय की दृष्टि से पिछले कहानी रूपों से अत्यन्त विशिष्ट है। स्वतन्त्रता के पश्चात् से भारतीय समाज का यथार्थ नयी कहानी में प्रखरता से प्रतिबिम्बित हुआ है। साथ ही यह यथार्थ व्यक्तिमन की विशिष्ट अनुभूति के रंग से रंजित है। नयी कहानी में न तो केवल समाजगत विषय यथार्थ मात्रा का व्यक्ति निरपेक्ष चित्रण है, न केवल व्यक्तिमन की अन्तश्चेतना की वाह्य निरपेक्ष झाँकी है, किन्तु बाहरी परिवेश के दबाब में बनते–बिगड़ते व्यक्तियों के जीवन और मन के विभिन्न सम्बन्धों, मूल्यों और सम्बेदनों की अभिव्यक्ति है और यह अभियक्ति अनुभूति–प्रधान है। सामाजिक परिवेश में रहते हुये व्यक्ति द्वारा अनुभूति या पहचानने लगे जीवन सत्य की अभिव्यक्ति ही ''नयी कहानी'' है। इसीलिये ऐसी कहानी सीमित जीवन–खण्ड एवं कालांश में सीमित हुये भी उसमें अभिव्यक्त अनुभूति और जीवन सत्य के कारण असीमित हो जाती है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् से लेकर हमारे समाज में काफी उथल–पुथल हुई, समाज में व्यक्तियों के अन्तःसम्बन्धों में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं। नयी परिस्थितियों, इन परिस्थितियों के कारण उत्पन्न होने वाले नये सम्बन्ध, नयी समस्यायें, नये संघर्ष, नये ढ़ंग का भावबोध– यही आज के युग का यथार्थ है। परम्परा से माने गये आदर्श आज के जीवन की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं हैं। इन पुराने आदर्शों और जीवन मूल्यों में आस्था रखने वाले की जिन्दगी कभी कृत्रिम हो जाती है, उन आदर्शों का निर्वाह न कर पाते हुये भी उनको बनाये रखने के प्रयत्न में जीवन खोखला हो जाता है। मूल्यों के इस विघटन को इनकें कारण उत्पन्न होने वाली जीवनगत निस्सारता और खोखलेपन को नयी कहानी का लेखक उजागर करता है और पुराने खोखले मूल्यों पर आघात करता है।

आज का कहानीकार जीवन के अन्तर और वाह्य में स्थिति तनाव द्वन्द और त्रासद स्थिति के प्रति पाठक को और सजग करता है। यह उसका मुख्य ध्येय है। वह किसी आदर्श या मूल्य के निष्कर्ष पर जाना नहीं चाहता। कमलेश्वर की ''राजा निरबंसिंया'' मोहन राकेश की ''मलबे का मालिक'' राजेन्द्र यादव की ''जहाँ लक्ष्मी कैद है'', अमरकान्त की ''डिप्टी कलेक्टर'' जैसी कहानियों में जीवनगत द्वन्द्व और मूल्य विघटन का यथार्थ मानसिक रूप से अंकित है।

आज की कहानी में कृत्रिम मूल्यों से मुक्त और मानवीय सहज संवेदना की झलक दिखायी देती है। इसमें नये ढ़ंग का आक्रोश है, मुक्त चिन्तन है, अपने युग के प्रति विशेष सजगता है। समस्त मानवीय मूल्यों के प्रति नवीन दृष्टि है। आधुनिकता का बोध है।

आधुनिकता समय का परिवर्तन ही नहीं है। नयी परिस्थितियों के अनुकूल जीवन का परिवर्तन आधुनिक है ही, किन्तु ऐसा परिवर्तन पहले के युगों में भी होता रहा है। आधुनिकता से तात्पर्य अनिवार्य रूप से पुराने विश्वासों और मूल्यों को छोड़ना और नये मूल्यों की खोज है। आधुनिकता का यह लक्षण हमारे रहन–सहन, खान–पान से लेकर सोचने–विचारने के ढ़ंग, विश्वास और सौन्दर्य–बोध तक में दिखायी देता है, परिवारिक और सामाजिक रिश्तों या सम्बन्धों में भी दिखायी देता है। यह आधुनिकता केवल नगरों और कस्वों में ही नहीं धीरे–धीरे गाँवों में भी व्याप्त होती जा रही है। और समाज के ऊँचे तबके से लेकर निचले तबके तक में पायी जाती है। आज का कहानीकार अपनी अनुभूति के आधार पर आधुनिकता को, अपनी युग–चेतना को अभिव्यक्ति देता है। यही आज की कहानी का कथ्य है।

शिल्प की दृष्टि से भी ''नयी कहानी'' की अपनी विशिष्टता है। कहानी की भाषा में, पात्रों की छोटी–छोटी क्रियाओं या चेष्टाओं में, घटना में, कभी–कभी कहानी की पूरी संरचना में ही नये ढंग की सांकेतिकता रहती है। नये ढंग के बिम्ब–विद्यान, नयी भाषा–शैली, नये उपमान और मुहावरे आदि में विशेषता दिखायी पड़ती है। भाषा अलंकार–विहीन, बोलचाल के ढंग की होती है। इसमें घटना का बीज, उसका विकास, चरम विकास, चरम बिन्दु जैसी विशेषताएँ नहीं रहती। घटनाओं को चरम बिन्दु पर ले जाकर केन्द्रित करने के बदले पूरी कहानी में ही आरम्भ से अन्त तक लेखक की अनुमति अभिव्यक्त रहती है।

नयी कहानी में कहानीकार की ओर से विवरण देने या वर्णन करने की बात नहीं रहती। घटनाओं और सन्दर्भों के माध्यम से कहानी अपने आप स्वचालित–सी आगे बढ़ती है। नयी कहानी के शिल्प–विधान में अनेक प्रयोग हुए है। कथानक, घटना, पात्र देशकाल की पृष्ठभूमि, शिल्प–विधान और भाषा–शैली आदि कहानी के विभिन्न पहलुओं की दृष्टि से नयी कहानियों को विभिन्न वर्गों में रखा जा सकता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, नयी कहानी की मुख्य विशेषता है इसमें अभिव्यक्त सामूहिक चेतना का वैयक्तिक अनुभूति से रंजित रूप। लेखक के जीवन–बोध का आधार कभी ग्रामीण अंचल होता है तो कभी नगरीय परिवेश और कभी नगर और ग्राम के मध्यस्तरीय कस्बे का वातावरण लेखक के लिए प्रेरणा–स्रोत बनता है। ''नयी कहानी'' की पहचान वास्तव में ऐसी अनुभूति ही है जिसमें सामाजिक परिवेश के दबाब का अहसास होता है और जिसमें पारम्परिक मूल्यों की मान्यताओं से मुक्त एक विशेष स्वच्छन्द तृप्ति दिखायी देती है। इस अनुभूति के आधारभूत ग्राम, नगर और कस्बे के हिसाब से ''नयी कहानी'' के तीन स्थूल वर्ग किये जा सकते हैं।

ग्रामीण वातावरण को ''फोकस'' में रखकर लिखी नयी कहानी ''आंचलिक कहानी'' कहीं जा सकती है। फणीश्वर नाथ रेणु की तीसरी कसम, ठुमरी, पान की बेगम, रसपिरिया, शैलेश मटियानी की ''प्रेतमुक्ति'', माता भस्मासुर, दो सुखों का एक सुख, शिवप्रसाद सिंह की ''नीच जात, धारा, मुरादा सराय, अंधेरा हसता है, मार्कण्डेय की हंसाबाई, अकेला, भूदान, शेखर जोशी की सर्पण, राजेन्द्र अवस्थी की अमरबेल, लक्ष्मीनारायण लाल की ''माघ मेले का ठाकुर, रामदरश मिश्र की एक औरत एक जिन्दगी आदि इस वर्ग की कहानियाँ है। ग्रामीण जीवन की एक औरत जिन्दगी आदि इस वर्ग की कहानियाँ है। ग्रामीण जीवन की समस्याएँ, ग्रामीण परिवेश, यहाँ की बोलीबानी आदि की विशेषताएँ इन कहानियों को विशिष्ट बनाती है।

नगरीय परिवेश को केन्द्र बनाकर लिखी गयी कहानियों में वहाँ की कृत्रिम जीवन–प्रणाली परिवार और समाज के भीतर व्यक्तियों के नये ढंग के अन्तः सम्बन्ध, स्त्री पुरूष सम्बन्धों में तनाव व्यक्तियों का अकेलापन, जीवन मूल्यों का विघटन इत्यादि का चित्रण मिलता है। निर्मल वर्मा की ''पराये शहर में'', ''अन्तर'', ''परिन्दे'', ''लवर्स'', लन्दन की रात'', मोहन राकेश की ''वासना की छाया'', काला रोजगार'', ''मिस्टर भाटिया'', ''मलवे का मालिक'', ''राजेन्द्र यादव की ''जहाँ लक्ष्मी कैद है'', एक कमजोर लड़की की कहानी, टूटना, कृष्ण बलदेव वेद की ''अजनवी'', बीच का दरवाजा'', भगवान के नाम सिफारिश की चिट्ठी, मन्नू भण्डारी की ''वापसी'', ''मछलियाँ'', गीत का चुम्बन, भीष्म साहनी की ''चीफ की दावत'', ''खून का रिश्ता'', रघुवीर सहाय की ''प्रेमिका'', ''मेरे और नंगी औरत के बीच'', ''सेव'', रमेश वक्षी की ''आया गीत गा रही थी'', ''अलग–अलग कोण'', रामकुमार की ''लौ पर रही हथेली'', ''सेलर'', श्रीकान्त वर्मा की ''शवयात्रा'', ''दूसरे के पैर'', महीप सिंह की ''काला बाप गोरा बाप'' आदि में नगर बोध की अनुभूति प्रधान है।

कस्बे के लोगों की मनोवृत्ति का और उपेक्षित जनजीवन का चित्रण करने वाली कहानियाँ हैं – कमलेश्वर की ''मुरदों की दुनियाँ'', ''तीन दिन पहले की बात'', ''चार घर'', धर्मवीर भारती की ''सावित्री नं0 दो'', ''धुआँ'', ''कुलटा'', ''गुलकी बन्नो'', ''अगला अवतार'', कृष्ण सोचती की ''यारों के यार'', अमरकान्त की ''जिन्दगी और जोंक'', डिप्टीकलेक्टर'' ''दोपहर का भेजन'', विष्णु प्रभाकर की ''धरती अब घूम रही है'' मनहर चौहान की ''घरघुसरा'', रामकुमार भ्रगर की ''गिरत्तिन'', हिमांशु जोशी की ''बूंद पानी'', ''अभाव'', हृदयेश की ''सभाएँ'', हेकोरेशन पीस'' आदि।

वर्तमान समाज की विकृतियों, व्यक्तियों के ढोंग, आरोपित भ्रष्टाचार आदि पर व्यंग्य तथा उपहास करते हुए अनेक कहानियाँ लिखी गयी हैं। हरशिंकर परताई की ''निठल्ले की डायरी'', ''सड़ंक बन रही है'', ''पोस्टरी एकता'', शरद जोशी की ''रोटी और धण्टी का सम्बन्ध'', ''बेकरी बोध'', रवीन्द्रनाथ स्वामी की ''सारधि की खोज'', ''हमारी वेशभूषा'' आदि इस कोटि की रचनाएँ हैं।

इस दिशा में अन्य अनेक उल्लेखनीय कहानीकार हैं – गंगाप्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह, राजकमल चौधरी, गिरिराज किशोर, सुरेश सिन्हा, ज्ञानरंजन, धर्मेन्द्र गुप्त, इब्राहीम शरीफ, विश्वेश्वर, भीमसेन स्वामी, अमरकान्त, रतीलाल शाहीन, कृष्ण बलदेव वेद, परेश, विपिन अग्रवाल आदि।

इन सभी कहानियों में अनेक समस्याओं का मार्मिक तथा सांकेतिक चित्रण मिलता है। महानगर की भीड़ में विवशता के बोझ मे दबे व्यक्ति की घुटन और छटपटाहट, उच्चवर्गीय महत्वाकांक्षाओं को लेकर संघर्षरत व्यक्तिवादी स्वार्थ मध्यवर्तीय व्यक्ति की मनोवृत्ति, परिवार और समाज के बीच चक्कर काटता व्यक्ति, बेरोजगारी से विक्षुब्ध शिक्षित युवावर्ग, कामकाजी नारी के परिवार और आफिस के बीच के बनते–बिगड़ते सम्बन्धों की बिडम्बनाएँ, राजनीतिक नेताओं के दो मुंहे चरित्रों से उत्पन्न हताशा और आक्रोश के भाव इन कहानियों में दिखलायी देते हैं।

सन्दर्भ

1. आधुनिक कहानी पार्श्व – डॉ0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णय
2. आधुनिक परिवेश और नवलेखन – डॉ0 शिव प्रसाद सिंह
3. आधुनिक साहित्य – नन्द कुमार बाजपेयी
4. आधुनिक हिन्दी कहानी – सं0 गंगा प्रसाद
5. कहानी संवेदना शीलता और प्रयोग – भगवान दास वर्मा
6. नई कहानी : पहचान और परख – सं0 इन्द्रनाथ मदान
7. नयी कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ – डॉ0 गोबरधन सिंह वेतावत
8. नयी कहानी गये प्रश्न – सन्त लखन सिंह
9. नये दशक की कहानी – सं0 राकेश दत्त
10. परिवार, व्यक्तिगत सम्पत्ति और राजसत्ता की उत्पत्ति – प्रो0 हरक सिंह